thearyasamaj.org

ओ३म्

आर्य्य मार्तण्ड

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान का मुखपत्र – पाक्षिक

वैदिक संस्कृति संरक्षण व सामाजिक परिवर्तन के लिए प्रतिबद्ध–आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, राजा पार्क, जयपुर

वर्ष : 89 अंक : 12
चैत्र शुक्ल प्रतिपदा
विक्रम संवत् 2072
कलि संवत् 5116
21 मार्च से 5 अप्रैल, 2015
दयानन्दाब्द : 191
सृष्टि संवत् : 01,96,08,53,116
मुख्य सम्पादक :
डॉ. सुधीर शर्मा – 9314032161
संपादक मंडल :
स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती, सीकर
श्री ओम मुनि, ब्यावर
श्री विजयसिंह भाटी , जोधपुर
आर्य शिरोमणि पं. विनोदी लाल दीक्षित
श्री हरिपाल शास्त्री , अलवर
श्री ओमप्रकाश विद्यावाचस्पति, जयपुर
श्री अर्जुनदेव चड्डा , कोटा
श्रीमती अरूणा सतीजा , जयपुर
श्री सत्यपाल आर्य, अलवर
श्री बृजेन्द्र देव आर्य , अलवर
श्री जगदीश जी आर्य, बहरोड़
श्री अनिल आर्य, जयपुर
प्रकाशक :
आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान
राजापार्क, जयपुर ।
दूरभाष : 0141 – 2621879
प्रकाशन : दिनांक 5 व 21
पत्र व्यवहार का अस्थाई पता :
डॉ. सुधीर शर्मा
सम्पादक, आर्य मार्तण्ड,
42, मुक्तानन्द नगर, गोपालपुरा बाईपास , जयपुर ।
मोबाईल – 9314032161
मुद्रक :
राज प्रिन्टर्स एण्ड एसोशिएट्स , जयपुर ।
ग्राफिक्स :
प्रिण्टपैक, जयपुर ।
ई–मेल : aryamartand@gmail.com
एक प्रति मूल्य : 5 रुपया
सहायता शुल्क : 100 रुपया
ऑनलाईन प्राप्ति :
www.thearyasamaj.org/aryamartand

स्वागतम् – 2072

सभी देशवासियों को आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान की ओर से

नवसंवत्सर – 2072 की शुभकामनाएं।

सृष्टि संवत् : 01 अरब, 96 करोड़, 08 लाख, 53 हजार, 116वां
विक्रम संवत् : 2072वां

नववर्ष समस्त देशवासियों के लिए, सम्पूर्ण सृष्टि के लिए शुभ एवं मंगलकारी हो।

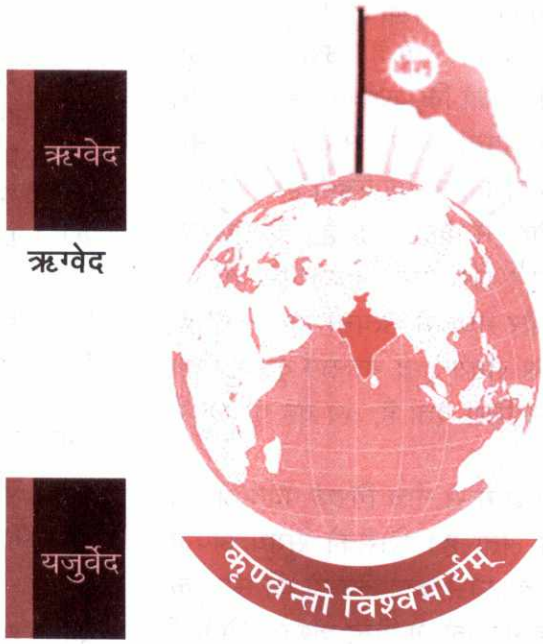

ऋग्वेद

सामवेद

यजुर्वेद

अथर्ववेद

– नमन –

शहीद भगतसिंह

राजगुरू

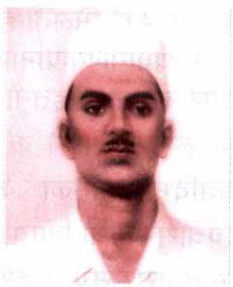

सुखदेव

तू उस ब्रह्म की उपासना कर , जिस ब्रह्म से जगत् की उत्पत्ति, स्थिति और जीवन होता है ; जिसके बनाने और धारण से यह सब जगत् विद्यमान हुआ है वा ब्रह्म से सहचरित है; उसको छोड़ दूसरे की उपासना नहीं करनी । – सत्यार्थ प्रकाश

thearyasamaj.org

वेदामृत "इन्द्रवृत्रासुर कथाविषयः"

इन्द्रस्य नु वीर्य्याणि प्र वोचं यानि चकार प्रथमानि वज्री।
अहन्नहिमन्वपस्ततर्द प्र वक्षणा अभिनत्पर्वतानाम् ।। 1।।
अहन्नहिं पर्वते शिश्रियाणं त्वष्टास्मै वज्रं स्वर्य्यं ततक्ष ।
वाश्रा इव धेनवः स्यन्दमाना अंजः समुद्रमव जग्मुरापः ।।2।।

भाषार्थ : तीसरी इन्द्र और वृत्रासुर की कथा है। इसको भी पुराणवालों ने ऐसा धर के लौटा है कि वह प्रमाण और युक्ति इन दोनों से विरुद्ध जा पड़ी है। देखो कि –

"त्वष्टा के पुत्र वृत्रासुर ने देवों के राजा इन्द्र को निगल लिया । तब सब देवता लोग बड़े भययुक्त होकर विष्णु के समीप में गये, और विष्णु ने उसके मारने का उपाय बतलाया कि – मैं समुद्र के फेन में प्रविष्ट होउंगा । तुम लोग, उस फेन को उठाकर वृत्रासुर के मारना, वह मर जायगा ।"

यह पागलों की सी बनाई हुई पुराणग्रन्थों की कथा सब मिथ्या है। श्रेष्ठ लोगों को उचित है कि इनकों कभी न मानें। देखो, सत्यग्रन्थों में यह कथा इस प्रकार से लिखी है कि –

(इन्द्रस्य नु0) यहां सूर्य्य का इन्द्र''' नाम है। उसके किये हुए पराक्रमों को हम लोग कहते हैं, जो कि परमैश्वर्य होने का हेतु अर्थात् बड़ा तेजधारी है। वह अपनी किरणों से वृत्र अर्थात् मेघ को मारता है। जब वह मरके पृथिवी में गिर पड़ता है, तब अपने जलरूप शरीर को सब पृथिवी में फैला देता है। फिर उससे अनेक बड़ी–बड़ी नदी परिपूर्ण होके समुद्र में जा मिलती हैं। कैसी वे नदी हैं कि पर्वत और मेघों से उत्पन्न होके जल ही बहने के लिये होती हैं। जिस समय इन्द्र मेघरूप वृत्रासुर को मार के आकाश से पृथिवी में गिरा देता है, तब वह पृथिवी में सो जाता है।।1।।

फिर वही मेघ आकाश में से नीचे गिरके पर्वत अर्थात् मेघमण्डल का पुनः आश्रय लेता है। जिसको सूर्य्य अपनी किरणों से फिर हनन करता है। जैसे कोई लकड़ी को छील के सूक्ष्म कर देता है, वैसे ही वह मेघ को भी बिन्दु करके पृथिवी में गिरा देता है और उसके शरीररूप जल सिमट सिमट कर नदियों के द्वारा समुद्र को प्राप्त होते हैं, कि जैसे अपने बछड़ों को गाय दौड़ के मिलती है।।2।।

– **"ग्रन्थप्रामाण्याप्रामाण्यविषय", ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका**

(यहाँ पर यह कथा इतनी ही प्रकाशित की जा रही है, इसको सम्पूर्ण रूप में जानने के लिए महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के "ग्रन्थप्रामाण्याप्रामाण्यविषय" में "इन्द्रवृत्रासुर कथा विषय" प्रसंग का अध्ययन कर लेवें। अगले अंक में देवासुर संग्राम कथा विषय को प्रस्तुत किया जायेगा ।)

सम्पादकीय | आर्य मार्तण्ड

राजा एवं उसका चयन

'राजा शब्द राजृ दीप्तौ धातु से निष्पन्न होता है। 'राजा' शब्द को परिभाषित करते हुए कहा गया है– **"राजते, शोभते, दीप्यते वा असौ स राजा, सम्यक् राजते असौ स सम्राट्"** अर्थात् जो समाज में अपने सदाचरण से सुशोभित अपने सद्गुणों के कारण देदीप्यमान, प्रतिष्ठित हो वही राजा और सम्यक् अर्थात् भली प्रकार सुशोभित, प्रकाशित और प्रतिष्ठित होवे वह सम्राट् कहलाता है। भारत रत्न डॉ. पाण्डुरंग वामन काणे ने अपनी पुस्तक 'धर्मशास्त्र का इतिहास' में निरूक्त (2/3) का सन्दर्भ देकर 'राजन्' शब्द की व्युत्पत्ति 'राजृ' धातु से बताई है जिसका अर्थ है चमकना, वहीं महाभारत के शान्तिपर्व (59/125) में राजा शब्द 'रंज' धातु से निष्पन्न माना गया है, जिसका अर्थ है प्रसन्न करना अर्थात् वही राजा है जो प्रजा को प्रसन्नता, सौख्य एवं संतुष्टी प्रदान करता है। राज्य के प्रशासन का संचालक होने के कारण राजा राजतन्त्र का सर्वाधिक महत्वपूर्ण अंग माना जाता है। राजा में प्रजा के संरक्षक, पालक, अभिभावक, और नेतृत्व के सद्गुण अवश्य होने चाहिए। सम्पूर्ण राजव्यवस्था को आदेशित एवं निर्देशित करना, शासनतन्त्र का संचालन करना राजा के महत्वपूर्ण कार्य माने जाते हैं। यद्यपि इस सन्दर्भ में महर्षि दयानन्द ने 'सभा–प्रभुत्वयुक्त' राज्य व्यवस्था का प्रतिपादन किया है तथापि व्यावहारिक रूप से देखा जाए तो राजतन्त्र में राजा का स्थान केन्द्रीय महत्व का होता है। वह सभापति के रूप में सभा का नियन्ता एवं संचालक होता है। महर्षि दयानन्द ने शासनाध्यक्ष और सभापति के रूप में अत्यन्त योग्य, प्रशंसनीय गुण–कर्म–स्वभावयुक्त, सर्वमान्य, सद्गुणी व्यक्ति को चयनित करने का उपदेश दिया है। अथर्ववेद के एक मन्त्र की व्याख्या करते हुए दयानन्द सरस्वती लिखते हैं–

इन्दो जयाति न परा जयाता अधिराजो राजसु राजयातै।
चर्कृत्य इड्यो वन्द्यश्चोपसद्यो नमस्योऽभवेह।।

हे मनुष्यों! जो इस मानव समुदाय में परम ऐश्वर्य का कर्ता, शत्रुओं को जीतने वाला हो, राजाओं में अधिराज हो, प्रकाशमान हो, सभापति होने के अत्यन्त योग्य हो, प्रशंसनीय, गुण–कर्म– स्वभावयुक्त, सत्करणीय, समीप जाने एवं शरण लेने योग्य, सब का माननीय होवे वही राजा बनने का अधिकारी है। महर्षि दयानन्द की उक्त व्याख्या से दो बाते स्पष्ट हैं– 1. राजा का निर्वाचन प्रजा द्वारा होता है। 2. निर्वाचन के समय यह देखना आवश्यक है कि चयन किये जा रहे व्यक्ति में अपेक्षित गुण हैं या नहीं। वर्तमान राजतन्त्र व्यवस्था में उपर्युक्त उपदेशों की पूर्णतः अवहेलना की जा रही है, इसी का दुष्परिणाम शासित जनता एवं समाज को भोगना पड़ रहा है। आज की प्रजातन्त्रीय व्यवस्था में शासनाध्यक्षों की निर्वाचन व्यवस्था में आमूलचूल परिवर्तन की आवश्यकता है।

जगत् के तीन कारण होते हैं – एक निमित्त , दूसरा उपादान और तीसरा साधारण कारण ।

thearyasamaj.org

ब्रह्मा आदि विद्वानों की परम्परा और भारत

भाग – 4 गतांक से आगे .....

एक गृहस्थ जिस विपत्ति की सम्भावना से पीड़ित हो उठता है, वैसी तीव्र पीड़ा यमदम्पती की है। यम प्रणाम करते हैं । साधारण सांस्कृतिक परम्परा से किन्तु प्रायश्चित्त के रूप में मन चाहे कोई भी तीन वर देने के अपने ऐश्वर्य को स्वस्ति के लिए अतिथि प्रणत कर देते हैं।

विवस्वान् (सूर्य) को हम प्रतिदिन देखते हैं, उपासना करते हैं, उसकी दिव्यता से परिचित हैं तथा उसे स्थावर जंगम जगत् की आत्मा मानते हैं, **सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च** । यह एक भौतिक पिण्ड है। इसके पत्नी, पुत्र, पशु, आदि परिवार संभव नहीं हैं। इस विवस्वान् का पुत्र बताया गया है 'यम' । यम के हमारे जैसा परिवार है, क्या यह सम्भव है? एक ग्रह के रूप में प्रसिद्ध शनि यम का भाई है। इसी भांति अश्विनीद्वय भी यम के भाई हैं। इनका भी द्युलोक में नक्षत्र रूप हैं। जैसा कि बताया जा चुका है। ये आयुर्वेद का उपदेश देते हैं। इन्द्र के पिता कश्यप स्वयं अपने पुत्र इन्द्र से आयुर्वेद की विद्या लेकर उसके एक अंग कौमारभृत्य का अपने प्रवचनों से प्रसार करते हैं। अत्रि के वंश की परम्परा को देखते हैं तो यही देखने में आता है कि चेतन से जड़ तथा जड़ से चेतन की उत्पत्ति का अनवरत क्रम चल रहा है। अत्रि–चन्द्र–बुध–पुरूरवा–आयु–नहुष–ययाति – (1) यदु (2) तुर्वसु (3) द्रुह्यु (4) अनु तथा (5) पुरू के क्रम में यदु से यादववंश तुर्वसु से यवनवंश तथा पुरू से पौरववंश चला । ये ही दो वंश ययाति के चले शेष तीन प्रायः शीघ्र ही नष्ट हो गये। अत्रि ब्रह्मा के पुत्र हैं। ये ब्रह्मा वे ही ब्रह्मा हैं जो सभी शास्त्रों के प्रवर्तक हैं। शास्त्र प्रवर्तक ब्रह्मा तथा उनके पुत्र अत्रि तो मनुष्य, उनके पुत्र चन्द्र तथा पौत्र बुध भौतिक पिण्ड, बुध के पुत्र पुरूरवा आदि पुनः सभी मनुष्य । क्या यह सम्भूतियॉ सम्भव हैं?

यह एक ऐसा विकट प्रश्न है जो समाधान की अपेक्षा रखता है। शास्त्रों की समग्र दृष्टि प्राप्त किये बिना वास्तविक समाधान की प्राप्ति दुर्लभ है। एक पक्ष को लेकर चलना सम्भव नहीं है। दोनों के साथ मनुष्यों के यौन सम्बन्ध तो बहुत हैं, मनुष्य के सम्बन्ध देवांगना से होने के भी उल्लेख हैं।

वाल्मीकि रामायण (बालकाण्ड, सर्ग 32–33) में कुशनाम की कन्याओं और वायुदेव का प्रसंग है जो अपने वंश के परिचय में विश्वामित्र द्वारा राम–लक्ष्मण को सुनाया जा रहा है। राजर्षि कुशनाभ की 100 कन्याएँ अपने घर के बगीचे में टहल रही हैं, खेल रही हैं। वायुदेव उनके पास आकर विवाह का प्रस्ताव रखते हैं। वायुदेव के इस अशिष्ट आचरण को ठीक न समझकर ये कहती हैं – आप वायु हैं, यह ठीक है , हम आपके प्रभाव को जानती हैं, किन्तु आप भी यह समझ लीजिये कि राजर्षि कुशनाभ की पुत्रियाँ हम भी अपने तप के प्रभाव से आपको आपके अधिकार पद से च्युत करवा देने में समर्थ हैं। हमारे पिता हैं , उनसे आप मांगिये । हम कभी यह पसन्द नहीं करेंगी कि कभी ऐसा समय आवे और हम अपने पिता का तिरस्कार कर स्वयं ही अपना वर चुन लें।

ऐसा ही एक अन्य प्रसंग है। पौरव वंश के राजर्षि ऋक्ष के पुत्र संवरण शत्रुओं से पराजित हो हिमालय पर रह रहे थे। उन्हें एक देवांगना दृष्टि में आती है जो उन्हें ही देख रही है। यह ज्ञात होते ही कि वह देखी जा रही है, झट से संवरण की आँखों से ओझल हो जाती है। ऐसी लम्बी लुका छिपी के बाद वह संवरण के पास आती है और बताती है कि वह सूर्य की पुत्री और सावित्री की अनुजा है। संवरण के द्वारा विवाह का प्रस्ताव रखे जाने पर वह कहती है आप मेरे पिताजी से मेरी याचना कीजिये वे निश्चित ही स्वीकार कर लेंगे।

संवरण महर्षि वशिष्ठ को निवेदन करते हैं, वे सूर्य के पास जाकर तपती की याचना करते हैं। संवरण की प्रशंसा करते हुए सूर्य कन्या को वशिष्ठ जी को दे देते हैं। उनका विवाह हो जाता है। उनके पुत्र का नाम कुरू है जिसके नाम पर पौरव वंश कौरव नाम से प्रसिद्ध हुआ ।

देवों और असुरों के मध्य सदैव युद्ध चलता रहता है। देवों के पक्ष की ओर से भूलोकवासी ये मनुष्य जो भारतीय हैं, असुरों से युद्ध करते रहे हैं। सूर्य चन्द्र वंश के अनेक राजा इन युद्धों में भाग लेते रहे हैं।

महाराज दशरथ ने ऐसे संग्राम में भाग लिया था जो अतीव प्रसिद्ध है जहाँ कैकेयी को दो वर मांगने को दशरथ ने छूट दी थी । राम का तो जन्म ही रावणवध के निमित्त था। अर्जुन दिव्यास्त्रों की प्राप्ति के लिए निरन्तर पाँच वर्ष तक स्वर्ग में रहे हैं। शिक्षा की पूर्णता पर इन्द्र गुरूदक्षिणा के रूप में निवात कवचों, पौलोमों और कालकेयों को संग्राम में नष्ट करने को कहते हैं जो अर्जुन द्वारा किया गया है। ऐसे सैंकड़ों प्रसंग भारतीय प्राचीन वाङ्मय में हैं।

ये प्रसंग विचारशील मनीषियों की आस्था को, उनकी श्रद्धा को विचलित कर देने वाले हैं। न इन्हें असत्य कहा जा सकता है और न पूर्णतः इन्हें सत्य मानकर निस्सन्देह स्वीकार ही किया जा सकता है। असत्य, मिथ्या अथवा काल्पनिक कुछ भी नाम देकर इन्हें त्यागते हैं तो वह भी सम्भव नहीं है, फिर हमारे पास रहता क्या है, वेद भी नहीं रहेगा , वेद में भी ये विषय हैं।

– क्रमशः

– प्रो. अनन्त शर्मा , अध्यक्ष, साहित्य–संस्कृति पीठ,
राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर ।

सृष्टि रचना क्रम : सत्व, रज, तम गुणयुक्त प्रकृति से महतत्व बुद्धि, उससे अहंकार, उससे शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गन्ध आदि पांच तन्मात्राऐं, सूक्ष्म भूत और 10 इन्द्रियॉ तथा ग्यारहवॉ मन; उनसे आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी आदि पंचमहाभूत आदि बने हैं। – सांख्य सूत्र ।

thearyasamaj.org

भारतीय कालगणना के दैनिक प्रयोग की विधि

(भारतीय नववर्ष के उपलक्ष्य में भारतीय कालगणना की दैनिक प्रयोग में लेने की सरल विधि की यह जानकारी एक बार पुनः सभी सदस्यों के लाभार्थ यहाँ प्रकाशित की जा रही है। आशा है कि सभी पाठकगण इस विधि को समझकर दैनिक व्यवहार में अंग्रेजी कैलेण्डर पर भारतीय कालगणना के प्रयोग को वरीयता देंगे।)

अंग्रेजी कैलेण्डर को छोड़ पूर्ण वैज्ञानिक, आधारभूत भारतीय कालचक का प्रयोग करें।

भारतीय संवत्सर, तिथि आदि का प्रयोग प्रचलन में हो, जिससे कि हम हमारी महान् वैज्ञानिक खोज को पुनः गौरव का स्थान दिला सकें। इसके लिए हमने एक प्रयोग विधि तैयार की है। इस विधि में सर्वप्रथम सभी भारतीय महीनों को एक क्रमांक दिया है जो कि अग्रप्रकार है, इसमें प्रथम भारतीय महीनों के नाम और पश्चात् उनके कमांक दिए हैं:– **चैत्र–01, वैशाख–02, ज्येष्ठ–03, आषाढ–04 ,श्रावण–05, भाद्रपद–06, आश्विन्–07, कार्तिक–08, मार्गशीर्ष–09, पौष–10, माघ–11, फाल्गुन–12**

भारतीय महीनों में दो पक्ष होते हैं – **पहला कृष्ण पक्ष** और **दूसरा शुक्ल पक्ष** इन्हें भी क्रमशः 01 व 02 क्रमांक दिया है। प्रत्येक पक्ष में 15 दिन होते हैं इसलिए प्रत्येक तिथि को गणित के क्रमानुसार अर्थात् **1–15** तक गिना जाए और **15** दिन के पश्चात् जब पक्ष परिवर्तन होगा तो पुनः 1 से तिथियां आरम्भ हो जाएंगी । परिवर्तन केवल इतना सा होगा कि पहले हम संस्कृत शब्दों के रूप में तिथियों का प्रयोग करते थे और अब गणितीय अंकों का प्रयोग करेंगे। संवत् तो जो चल रहा है वह लिखा ही जायेगा । अब इसके प्रयोग का सूत्र है–

"तिथि–पक्ष–मास–संवत्"

अर्थात् सर्वप्रथम तिथि लिखेंगे, पुनः पक्ष, पुनः महीना या मास और अन्त में संवत् लिखा जायेगा। अब इसको एक उदाहरण से समझते हैं। उदाहरण : मान लीजिए कि आज की तिथि है :

"मार्गशीर्ष कृष्ण चतुर्दशी, संवत् 2071 विक्रमी"

सर्वप्रथम तिथि चतुर्दशी का 14, कृष्ण पक्ष का 01, मार्गशीर्ष नौंवा महीना है इसलिए 09 और संवत् 2071 है ही। अब इसको गणित के रूप में लिखेंगे :

" 14.01.09.2071 "

इस प्रकार सभी महीनों की सभी तिथियों के लिए प्रयोग कर सकते हैं । क्रमांकों की जानकारी और सूत्र उपर दे दिया गया है। इस विधि को प्रयोग में लेने के लिए प्रारम्भ में थोड़ा अभ्यास करना होगा, परन्तु धीरे–धीरे अभ्यास दृढ़ हो जायेगा। इसके प्रयोग से एक ओर जहां ऋषियों द्वारा की गई महान् वैज्ञानिक खोजों को व्यवहार में स्थापित कर पायेंगे । वहीं दूसरी ओर नववर्ष और क्रिसमस के नाम पर समस्त भरतखण्ड में दिखाई देने वाले तमाम पाखण्ड, पतन को समाप्त करने में सक्षम बन गौरवशाली राष्ट्र के निर्माण के भागीदार बनेंगे। राह हमने बना दी , नींद आपकी भगा दी अब विचार आपका है , निर्णय आपका है कि जागरूक रहकर आगे बढ़ना है या सोते ही रहना है।

– अनिल आर्य, जयपुर

आर्य समाज एक अतुलनीय, विस्मयकारी, क्रान्तिकारी, वैज्ञानिक, राष्ट्ररक्षक संस्था –

आर्य समाज ने हिन्दू समाज में पुनः नव जीवन फूंकने का उद्योग किया और हिन्दू जनता में आत्मविश्वास, राष्ट्रीय अभियान उत्पन्न किया ।

– Encyclopedia Britannica, P. 558

आर्य समाज ने वर्तमान वैज्ञानिक आन्दोलन एवं वैदिक धर्म में एकता स्थापित करने के प्रयत्नों की खोज की।

– Encyclopedia Americana, P. 372

देश के राजनैतिक पुनरूज्जीवन के लिए जो आन्दोलन किये गये हैं, उनमें कोई भी आर्य समाज जैसा शक्तिशाली आन्दोलन नहीं है।

– पं. श्याम जी कृष्ण वर्मा
(इण्डियन सोशियोलोजिस्ट पत्र, मई 1908)

आर्य समाज नैतिक मूल्यों, शान्तिवाद, शाकाहार और सार्वभौम चक्रवर्ती राज्य पर आश्रित समाज निर्माण का पृष्ठ पोषक है।

– थियोसोफिकल न्यूज एण्ड नोटिस
(लन्दन, जून 1955, स्मारिका पृ0 38)

आर्य समाज इस्लाम एवं ईसाइयत के विरुद्ध एक प्रतिक्रिया थी विशेषकर इस्लाम के । यह आन्तरिक दृष्टि से धर्मयुद्ध करने वाला और सुधारक आन्दोलन था और साथ ही बाह्य आक्रमण से रक्षा करने वाला संगठन था।

– जवाहर लाल नेहरू

(The Discovery of India' P. 290, The Signet Press, Culcutta)

आर्य समाज शिक्षित हिन्दू के समक्ष सर्वांगीण एवं व्यापक सिद्धान्तों का एक ऐसा दर्शन प्रस्तुत करता है, जो भारतीय परम्परा तथा शास्त्रों के अनुकूल है। उसके पास सामाजिक तथा शैक्षिक उन्नति की ऐसी योजनाएं भी हैं जिनके अभाव में वास्तविक प्रगति असंभव है।

– दी पीपल्स ऑफ इण्डिया : (सर हर्बर्ट रिसेल)

धृतिक्षमादमोऽस्तेय शौचं इन्द्रियनिग्रह । धीर्विद्या सत्यंऽक्रोधो दशकं धर्मलक्षणं ।। – मनुस्मृति ।।
धृति, क्षमा, दम, अस्तेय, शौच, इन्द्रियनिग्रह, धीः, विद्या, सत्य और अक्रोध ये 10 धर्म के लक्षण हैं।

thearyasamaj.org

अंग्रेजों का भारत आगमन तथा दीर्घकाल तक अपना शासन तंत्र स्थिर रखना, भारतवासियों के लिए जिन अभिशापों को लेकर आया उन्हें इस प्रकार उल्लिखित करना चाहिए – प्रथम – **"मर्चेण्ट"** – ये लोग व्यापारी बनकर भारत में आये और मुगल बादशाह से अनुनय–विनय कर सर्वप्रथम सूरत (गुजरात) में अपनी कोठी कायम की। यह वाणिज्य के बहाने देश के आर्थिक शोषण का प्रारम्भ था। दूसरा – **"मिलिटरी"** बनाई और उसके बल पर मुगल, सिख, राजपूत तथा मराठा शक्तियों को नष्ट किया । इसके बाद आये – **"मिशनरी"** (ईसाई प्रचारक) इन्होंने छल, बल, कपट से भारतवासियों को ईसाई बनाया । अब देखते – देखते डब्ल्यू. सी. बनर्जी (कांग्रेस के प्रथम अध्यक्ष), माईकेल मधुसूदनदत्र, रामचन्द्र बसु, कवयित्री तरूदत्त, संस्कृत विद्वान् श्री नीलकंठ शास्त्री, महाराजा रणजीतसिंह का पुत्र राजकुमार दिलीप सिंह ये सब ईसाई बन गये। अब शिक्षा को आमूल–चूल बदलने और उसे पाश्चात्य प्रभावित करने का काम किया – **"मैकाले"** ने , जिसने अपने पत्र में लिखा कि इस शिक्षा नीति के द्वारा ऐसी पद्धति बनायी जाये जो भारतीयों को काले साहब बना दे। वे रूप, रंग, आकार, प्रकार में चाहे भारतीय रहें किन्तु विचारों, चिन्तन तथा आचरण में पूरे अंग्रेज बन जाऐं। इधर **"मैक्समूलर"**, मोनियर विलियम्स, क्रिमिथ आदि पाश्चात्य संस्कृतज्ञों की नीति रही कि वे अपने अध्ययन के बल पर शास्त्र ग्रन्थों की ऐसी व्याख्या करें जिससे भारतीय वैदिक धर्म को गलत रूप में पेश किया जा सके । अंग्रेजों के पंच मकार यही थे जिनका प्रतिकार करना अत्यावश्यक था ।

यों तो 10 अप्रैल , 1875 को मुम्बई में स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित एक धार्मिक सामाजिक आन्दोलन था, किन्तु इस संस्था ने राजनैतिक स्वतन्त्रता की कामना करने के साथ देश की आर्थिक स्थिति को सुधारने तथा जीवन में स्वदेशी वस्तुओं के प्रयोग के महत्व दिया । यह **"एम–मर्चेण्ट"** उत्तर था । पंजाब के आर्य समाजियों ने स्वदेशी वस्तुओं के उपयोग का आह्वान तब किया जब गांधीजी अपनी वकालत दक्षिण अफ्रीका में कर रहे थे । जहां तक **"मिलिटरी"** का सम्बन्ध है , स्वामीजी ने स्वदेशी राज्य को सर्वोपरि उत्तम बताया तथा माता–पिता के समान सुखदायक होने पर भी विदेशियों के राज्य को कभी वरीयता नहीं दी । उन्होंने विदेशी सत्ता का मुकाबला करने के लिए अहिंसा को श्रेष्ठ बताया । इसी का परिणाम था कि जब गांधीजी के नेतृत्व में सत्याग्रह संग्राम हुआ तो लाखों आर्य समाजियों ने सत्याग्रही बनकर उसमें भाग ही नहीं लिया , अपितु क्रान्तिकारियों की वह जमात उभरी जो आर्य समाज से प्रभावित थी – सरदार भगतसिंह, रामप्रसाद बिस्मिल, शाहपुरा के केसरीसिंह बारहठ तथा उनके पुत्र जोरावरसिंह, फांसी खाने वालों की दूसरी पंक्ति, जिसमें मास्टर गेंदालाल तथा ठाकुर रोशनसिंह उभरे, आर्य समाज के भक्त थे।

जहाँ तक विदेशी मिशनरियों की अराष्ट्रीय गतिविधियों का सम्बन्ध है, आर्य समाज ने अपनी सेवा प्रवृत्तियों तथा अन्य शास्त्रार्थ आदि बौद्धिक कार्यक्रमों के द्वारा इस विदेशी आक्रमण का जमकर प्रतिकार किया । इसी का परिणाम हुआ कि लाखों पिछड़े आदिवासी विदेशियों के चंगुल में फंसने से मुक्त हो सके । जब अंग्रेजी शासन ने भारत के लिए नई शिक्षा नीति बनाने के लिए लार्ड क्लाइव आदि को नियुक्त किया तो आर्य समाज ने उसके समानान्तर राष्ट्रीय शिक्षण संस्थाओं को स्थापित किया जिनमें लाहौर का डी.ए.वी. कॉलेज तथा गुरूकुल कांगड़ी मुख्य है। इस शिक्षा पद्धति में छात्रों को परिवार से सुदूर गुरूकुल में अध्ययन करने का नियम था। इन शिक्षण संस्थाओं में राष्ट्रीय भावों को महत्त्व दिया गया तथा हिन्दी को माध्यम के रूप में स्वीकार किया गया । ज्ञानोपार्जन के साथ–साथ चरित्र निर्माण पर जोर दिया जाता था।

प्रो. मैक्समूलर, मोनियर विलियम्स, मैकडॉनल आदि पाश्चात्य संस्कृत विद्वानों ने भारतीय भाषाओं का अध्ययन तो किया था किन्तु इन्होंने वेदादि शास्त्रों की गणना की और यह स्थापित किया कि वेदमंत्र बहुदेवोपासना का प्रतिपादन करते हैं तथा उसमें जड़ पूजा पर बल दिया जाता है। आर्य समाज ने शास्त्रों की वास्तविक व्याख्या की और प्राचीन शास्त्रों की वैज्ञानिक समझ पैदा की ।

इस प्रकार 140 वर्ष पूर्व आर्य समाज की स्थापना कर नवजागरण का शंखनाद किया गया । फलतः देश में राष्ट्रीयता को बल मिला । आर्य समाज का विस्तार भारत से भिन्न देशों में भी हुआ और दक्षिण अफ्रीका, फिजी, मॉरीशस आदि देशों में आर्य समाजें स्थापित हुईं । वस्तुतः आर्य समाज भारत तक सीमित न रहकर अन्तर्राष्ट्रीय आन्दोलन बना । आज इंग्लैण्ड, अमेरिका तथा अफ्रीका महाद्वीप के अनेक नगरों में स्थापित आर्य समाजों ने भारतीय सभ्यता, संस्कृति तथा चिन्तन दर्शन का प्रचार किया है तथा इसक अनुयायी भारत के आदशौ को विश्वव्यापी बना रहे हैं ।

– डॉ. भवानीलाल भारतीय, प्रसिद्ध वैदिक विद्वान्

स्वामी दयानन्द राष्ट्रीय संगठन व पुनर्निर्माण करने वाले अन्यतम श्रेष्ठ ऋषि थे। – फ्रेंच लेखक रोम्यॉ रोला ।

thearyasamaj.org

।।ओ३म्।।

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान का वार्षिक चित्र

इस प्रपत्र में पूर्ण विवरण अवश्य भेजे

1 अप्रैल..... से 31 मार्च..... तक का विवरण एवं 1 अप्रैल..... से 31 मार्च..... तक का विवरण

आर्य समाज.....जिला.....का वार्षिक वृत्तान्त

आय का विवरण	रू.	पै.	व्यय का विवरण	रू.	पै.
सभासदों का चंदा दान मकान किराया विवाह संस्कारों से आय वार्षिकोत्सव से बचत अन्य आय			साप्ताहिक सत्संग में खर्च अतिथि सत्कार सभा को निश्चित कोटि सभा को दशांश वेद प्रचार आर्य मार्तण्ड दयानंद सेवा सदन वार्षिक उत्सव विशेष प्रचार आदि		
योग			योग		

1. वर्ष के आरम्भ में सभासदों की संख्या
   वर्ष के अंत में आर्य सभासदों की संख्या
   आर्यों (सहायकों) की संख्या रही।
2. वार्षिक निर्वाचन दिनांक को हुआ।
3. अंतरंग साधारण सभा बार हुई।
4. वार्षिकोत्सव दिनांक को हुआ।
5. सभा को दी गई राशि की
   रसीद सं. दि. है।
   (1.) निश्चित कोटि (2.) दशांश
   (3.) आर्य मार्तण्ड (4.) अन्य

6. उपर्युक्त आय पर..... दशांश की राशि.....बनती है।
   दशांश निश्चित कोटि आर्य मार्तण्ड का कुल योग.....होता है।
7. आर्य समाज के अधीन निम्नरथ संस्थायें है। (यहाँ केवल नाम ही लिखे, ब्यौरा पृथक संलग्न करे)
8. इस समाज की साधारण सभा दिनांक ..... द्वारा आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए निम्नस्थ प्रतिनिधि चुने गये।

क्र.स.	प्रतिनिधि का नाम	पिता का नाम	आयु	शतांश चन्दा	हस्ताक्षर प्रतिनिधि
1.					
2.					
3.					
4.					

प्रमाणित किया जाता है कि उपयुक्त प्रतिनिधियों की अधिवेशनों में उपस्थिति नियमानुकूल है तथा इनकी आय का शताशं चन्दा पूरे वर्ष का प्राप्त हो चुका है। सभा के अधिवेशन में वे ही प्रतिनिधि भाग ले सकेंगे जिनके आय का शतांश चन्दा उपर्युक्त वार्षिक चित्र में अंकित होगा।

दिनांक ..... ह. प्रधान ह. मंत्री ह. कोषाध्यक्ष ह. ऑडीटर

आर्य समाज के आर्य सभासदों की सूची जिनका गत वर्ष का पूरा चन्दा जमा हो चुका है और साप्ताहिक अधिवेशन में 25% उपस्थिति है। वे दो वर्ष से अधिक समय से सदाचार पूर्वक आर्य समाज के सदस्य हैं।

क्र.स.	नाम	पिता का नाम	पुत्र/पुत्री	आयु	मासिक आय चन्दा	साप्ताहिक अधिवेशन में उपस्थिति	विशेष

ह. मंत्री आर्य समाज

स्वामी दयानन्द ने हिन्दू समाज के पुनरूत्थान में इतना अधिक हाथ बंटाया कि उन्हें 19वीं शताब्दी का प्रमुखतम हिन्दू समझा गया ।

– तारकनाथ दास, म्यूनिख (जर्मनी)

thearyasamaj.org

भारतीय पर्वों का आधार सामाजिक परिवेश एवं वैज्ञानिक

– डॉ. सुधीर शर्मा

''होली, दीवाली, रक्षाबन्धन, विजयदशमी आदि सहित समस्त भारतीय पर्वों के आयोजन के पीछे एक श्रेष्ठ व उपयुक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, चिकित्सकीय एवं वैज्ञानिक कारण अवश्य होता है। होली मनाने के उद्देश्य के पीछे भी अति महत्वपूर्ण चिकित्सकीय कारण होता है।'' उक्त विचार आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान के मंत्री डॉ. सुधीर शर्मा ने 5 मार्च, 2015 को जनता कॉलोनी स्थित आर्य समाज में आयोजित किये गये ''होली स्नेह मिलन समारोह'' में मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए कहे। दोपहर 2.30 बजे से पं. देवव्रत शास्त्री के ब्रह्मत्व में ''नवसस्येष्टि यज्ञ'' के साथ कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ । पश्चात् दीपक शास्त्री, श्रुति आर्य ,सुधा मित्तल, सरोज आर्य, सुनील अरोड़ा आदि ने ईश–भक्ति आदि के भजनों की मनोहर प्रस्तुति दी। भजनों के पश्चात् कार्यक्रम के मुख्य वक्ता प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् डॉ. रामपाल विद्याभास्कर ने पौराणिक आख्यानों की वैदिक व्याख्या करते हुए होली का वास्तविक स्वरूप समझाया। कार्यक्रम में अन्य अनेक वक्ताओं ने भी अपने विचार रखे तथा आर्य समाज जनता कॉलोनी की ओर से विभिन्न आर्य विद्वानों , पदाधिकारियों, गणमान्य नागरिकों का सम्मान भी किया गया ।

अन्त में कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री अशोक जी शर्मा, प्रिंसीपल, डीएवी, वैशालीनगर ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन के साथ कार्यक्रम के समापन की घोषणा की।

शोक समाचार

आर्य समाज, कोटा के विद्वान् पं. रामदेव जी शर्मा की पूज्य माताजी श्रीमती शकुन्तला देवी का 4 मार्च, 2015 को 95 वर्ष की आयु में देहावसान हो गया । जिनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किशोरपुरा स्थित मुक्तिधाम में किया गया। आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान दिवंगत आत्मा की शांति की प्रार्थना करते हुए शोक संतप्त परिवार को इस दुःखद घड़ी से उबारने की शक्ति प्रदान करने की ईश्वर से प्रार्थना करती है।

आर्य समाज, निम्बाहेड़ा ने जगाई सामाजिक चेतना

निम्बाहेड़ा की समस्त आर्य समाजों ने अन्य सामाजिक संगठनों के साथ मिलकर समाज में होली के पावन अवसर पर आ रही विकृतियों को दूर करने के लिए सामाजिक चेतना जगाने हेतु सराहनीय प्रयास किये। इस कार्य हेतु उक्त संगठनों के कार्यकर्ताओं ने अपने–अपने स्थानों सार्वजनिक होलिकाग्नि में नवान्न, घी, कपूर, हवन सामग्री आदि औषधीय पदार्थों को डालकर वैदिक मंत्रों के साथ डालने का संकल्प लिया और होली के दिन इसे पूरा भी किया। इसके अतिरिक्त सार्वजनिक स्थानों पर 15 दिन पूर्व से ही होर्डिंग आदि लगाये। छोटी – छोटी अनेक टीमों का गठन कर विद्यालयों, बाजारों, विभिन्न स्थानों पर होली जलाने वाली टोलियों, विभिन्न संस्थाओं, आसपास के अनेक गांवों में जाकर इस सम्बन्ध का प्रपत्र छपवाकर वितरित किया और लोगों को होली का महत्व समझाया। 15 दिनों तक ये सघन अभियान चलाया गया जिसका सकारात्मक प्रभाव होली के दिन पूरे शहर में देखने को मिला ।

विशेष सूचना : आर्य मार्तण्ड द्वारा शीघ्र ही ''शंका समाधान'' नाम से एक विशिष्ट कॉलम शुरू किया जा रहा है । जिसमें आप वेद , व्याकरण, राष्ट्र, धर्म, अध्यात्म, आर्य समाज, ईश्वर आदि विषयों से जुड़ी हुई शंकाऐं पूछ सकते हैं जिनका आर्य मार्तण्ड के पैनल से जुड़े हुए विद्वानों यथोचित समाधान करवाने का प्रयास किया जायेगा। तथा पत्र के इस शीर्षक के अन्तर्गत उन सभी शंकाओं को समाधान के साथ सभी पाठकों के लाभार्थ प्रकाशित किया जायेगा। अभी हमारे पैनल से अग्रांकित विद्वान जुड़े हुए हैं :

- डॉ. भवानी लाल भारतीय , श्रीगंगानगर, ।
- डॉ. रामपाल विद्याभास्कर, जयपुर ।
- श्री मदनमोहन जी आर्य, गंगापुर सिटी (सवाई माधोपुर) ।
- पं. वासुदेव जी शास्त्री , जयपुर ।
- श्री रामनारायण जी शास्त्री , जोधपुर ।
- आचार्य उषर्बुध जी , जयपुर ।

और भी कोई विद्वान् इस पैनल में जुड़कर इस अभियान का हिस्सा बनना चाहे, उनका सहर्ष स्वागत है। – सम्पादक

स्वामी दयानन्द भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति के महानतम् संदेशवाहक थे। – बी.बी.मजूमदार

thearyasamaj.org

डाक पंजियन सं. RJ / JPC / FN-221 / 2014-2016 / आर. एन. आई नं.10471/60

कार्यालय सूचना एवं निर्देश

- आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान से सम्बद्ध आर्य समाज के मंत्री तथा प्रधानों को सूचित किया जाता है कि सभा का निर्वाचन आगामी जून माह में प्रस्तावित है, अतः जिन आर्य समाजों के वार्षिक मानचित्र विगत दो या एक वर्ष से सभा को प्रेषित नहीं किये गये हैं, वे समस्त आर्य समाजें अपना दो या एक वर्ष का दशांश, निश्चित कोटि तथा आर्य मार्तण्ड शुल्क 31 मार्च, 2015 तक सभा को निर्धारित प्रपत्र में भरकर आवश्यक रूप से प्रेषित कर देवे। प्रतिवेदन प्रपत्र हेतु एवं विस्तृत जानकारी प्राप्त करने हेतु सभा कार्यालय 0141–2621879 पर सम्पर्क कर सकते हैं।
- आर्य मार्तण्ड के नववर्ष से प्रकाशित होने वाले अंकों में एक नया कॉलम "शंका समाधान" का शुरू किया जाने का प्रस्ताव है, जिसमें पाठकों के द्वारा किसी भी विषय से सम्बन्धित शंकाएं की जा सकेंगी जिनका आर्य विद्वानों के द्वारा समाधान करवाया जायेगा । अतः सभी से निवेदन है कि जो भी विद्वान् इस कार्य में जुड़कर सहयोग करना चाहें, वे अपना नाम, पता, सम्पर्क, विशेषज्ञता आदि की जानकारी हमें aryamartand@gmail.com पर भेज सकते हैं। वैदिक विचारधारा को और भी अधिक व्यापक बनाने का यह एक श्रेष्ठ माध्यम बन सकता है।
- सभी आर्य समाजों, जिला आर्य प्रतिनिधि इकाईयों, आर्य महानुभावों से निवेदन है कि "आर्य मार्तण्ड" में समस्त राजस्थान का प्रतिनिधित्व हो सके, इसके लिए पत्र द्वारा स्वतन्त्र पत्रकारिता में रूचि रखने वाले आर्य महानुभावों को पत्र से जुड़ने का एक सुनहरा अवसर प्रदान किया जा रहा है। जो कोई भी अपने क्षेत्र में रहकर आर्य मार्तण्ड के लिए पत्रकारिता कर सेवा करने के इच्छुक हों, वे अपनी सम्पूर्ण जानकारी, फोटो के साथ aryamaratnad@gmail.com पर मेल कर सकते हैं।

प्रतिक्रिया

- अभी कुछ दिनों पूर्व किसी कार्यवश मेरा जयपुर जाना हुआ, तो मैं आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय भी गया। जैसे ही मैं वहाँ पहुंचा , मुझे एक बार तो विश्वास नहीं हुआ कि यह वही सभा कार्यालय है। क्योंकि सभा कार्यालय का पूरा स्वरूप पूर्णतया नवीनता का परिचय दे रहा था और सभा भवन तो अपना पुराना चोला उतारकर नया चोला पहने ऐसे सज रहा था, मानो कि विवाह के लिए किसी घर को सजाया गया हो। सच में दशकों से खण्डहर से, वीरान से इस स्थान को देखते–देखते आँखें भी चरमराने लगी थी। परन्तु अब अनुभव हो रहा है कि जिस तरह ये भवन चमक बिखेरने लगा है वैसे ही आर्य प्रतिनिधि सभा भी अपनी खोई हुई चमक पुनः प्राप्त करेगी । नवीन टीम को मैं बधाई देते हुए यह कहना चाहूँगा कि केवल भवन ही सब कुछ नहीं होता और आर्य समाजों के पास सम्पत्ति का भी कोई अभाव नहीं है। इसलिए सभा कार्यक्षेत्र में भी अपनी चमक बिखेरे कुछ ऐसा प्रयास करें। तभी हमारा प्रयास सफल होगा ।

  – सत्यवीर आर्य , कवि (वीररस), नंदबई, भरतपुर।

- आर्य मार्तण्ड में हो रहे परिवर्तन सुखदायक हैं, इसके लिए मैं नवीन टीम को बधाई देना चाहूँगा, परन्तु इसमें अभी और सुधारों की आवश्यकता है। आशा है कि नवीन टीम इस पत्र को और भी अधिक प्रभावकारी व पठनीय बनाने हेतु प्रयास करेगी। भविष्य के लिए शुभकामनाऐं।

  – धर्मवीर आर्य, वरिष्ठ अधिवक्ता, राजस्थान उच्च न्यायालय, जयपुर।

आगामी कार्यक्रम

- 11व 12 अप्रैल, 2015 को ऋषि उद्यान, अजमेर में आर्य वीर दल, राजस्थान के पदाधिकारियों एवं प्रमुख कार्यकर्ताओं का दो दिवसीय आवासीय चिन्तन शिविर एवं विचार गोष्ठी ।

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान राजा पार्क जयपुर के लिये राज प्रिन्टर्स एसोसियेट्स बेसमेंट, 45, परनामी मन्दिर जयपुर द्वारा मुद्रित।
मु. सम्पादक एवं प्रकाशक डॉ. सुधीर शर्मा, मंत्री-आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान।

प्रेषित

प्रेषकः–
सम्पादक, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान
राजा पार्क, जयपुर–302004

23-3-15

यूको बैंक A/c No.:18830100010430 तिलक नगर, जयपुर

विशेष – आर्य मार्तण्ड में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। उनमें सम्पादक की सहमति आवश्यक नहीं है।